सन्देश

डॉ. जितेन्द्र सिंह
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पृथ्वी विज्ञान
राज्य मंत्री पीएमओ, कार्मिक, लोक शिकायत
और पेंशन, परमाणु ऊर्जा एवं अंतरिक्ष

भारत के पास प्राचीन वैज्ञानिक विरासत है जिसका दायरा खगोलिकी, औषधि, शल्यचिकित्सा, गणित, धातु विज्ञान जैसे क्षेत्रों तक फैला हुआ है। इनमें से कुछ के लिखित प्रमाण हैं परंतु अधिकतर ज्ञान अलिखित है। वर्षों तक विदेशी शासन के अधीन रहने के बाद, यह भारत के वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, विज्ञान प्रशासकों और नीति-निर्माताओं की सन्निहित वैज्ञानिक भावना तथा प्रौद्योगिकीय कुशाग्रता थी जिनसे 1947 में आजादी मिलने के बाद बहुत शीघ्रता से देश को विश्व की एक वैज्ञानिक शक्ति बनने का संबल मिला।

आज, जब हम भारत की आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, ऐसे में यह मुनासिब है कि हम हमारी वैज्ञानिक सामर्थ्य और उपलब्धियों का आंकलन व मूल्यांकन करें। अभी हाल के कुछ वैश्विक सूचक खास तौर पर उल्लेखनीय हैं। आज का भारत शोध प्रकाशन में विश्व में तीसरे स्थान पर है और विश्व के प्रतिष्ठित एवं मान्यता प्राप्त एससीआई शोध जर्नलों के शोध प्रकाशनों की गुणवत्ता के मामले में नौवें स्थान पर है। वैश्विक नवाचार सूचकांक (जीआईआई) के अनुसार विश्व की शीर्षस्थ 50 नवाचारी अर्थव्यवस्थाओं में भारत ने अपनी जगह (48वां स्थान) बनाई है। कृत्रिम बुद्धि, खगोलिकी, सौर ऊर्जा, जलवायु अनुसंधान, और अभी हाल के समय में वैश्विक टीका अनुसंधान, विकास तथा आपूर्ति जैसे क्षेत्रों में अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक गठबंधनों के सदस्य के रूप में भी लगातार अपनी उपस्थिति दर्ज करता जा रहा है। यहां तक कि अभी शीघ्र ही भारत को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के एक्जिक्यूटिव बोर्ड का अध्यक्ष भी निर्वाचित किया गया था।

यद्यपि ये उन्नतियां सचमुच प्रशंसनीय हैं और हमें गर्व का अहसास कराती हैं, परन्तु देश को अनेक और उपलब्धियों की प्रतीक्षा है। भारतीय वैज्ञानिक समुदाय और यहां के वैज्ञानिक संस्थान देश को 'आत्मनिर्भर' बनाने की दिशा में सटीकता के साथ सच्चे अर्थों में जुटे हैं। साथ ही इन्होंने ऐसी समस्याओं के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय समाधान प्रस्तुत किए हैं जिनका सामना न केवल भारतीय बल्कि विश्वभर के नागरिक करते हैं। यह बहुत ही उपयुक्त समय है, प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी को विशेष तवज्जो को संज्ञान लेते हुए वर्तमान सरकार ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को विशेष प्रोत्साहन दिया है।

हालांकि इसके लिए भारतीय वैज्ञानिक अधिष्ठान को अपनी कार्य प्रणाली को नई दिशा देनी होगी। मैंने यह बात कई मंचों से कही है और एक बार पुनः दुहराना चाहूंगा कि विभिन्न मंत्रालयों तथा विभागों के वैज्ञानिकों को अनुसंधान व विकास के क्षेत्र में सहयोग को आगे बढ़ाना चाहिए ताकि आयात पर हमारी निर्भरता को काफी कम किया जा सके। विज्ञान के मंत्रालयों एवं विभागों को अलग-थलग काम करने की प्रवृत्ति को विराम देकर सक्रिय पारस्परिक सहयोग प्रक्रिया अपनानी होगी ताकि वैज्ञानिक प्रयत्न और भी अधिक नागरिक-केंद्रित हों। और आज उत्कृष्ट अनुसंधान- विकास में संलग्न विभिन्न उद्योगों तथा कार्पोरेट घरानों सहित वैज्ञानिक संस्थानों को भावी सहयोगों एवं आपसी नेटवर्किंग की दिशा तय करके उसे मजबूत बनाना होगा।

भारत की आजादी के 75वें वर्ष का उत्सव देश में वैज्ञानिक उद्यम के लिए यह संकल्प लेने का एक ऐसा अवसर होना चाहिए जिसमें देश की प्रगति में काम करने हेतु वे एक साथ आगे आएं। यद्यपि यह अवसर इस बात का उल्लास मनाने का भी है कि इन सभी वर्षों में विज्ञान और वैज्ञानिकों ने भारत को क्या योगदान दिया। और इसलिए मैं विज्ञान प्रगति और सीएसआईआर-राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं नीति अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर-निस्पर) को यह विशेषांक लाने के लिए बधाई देता हूँ जिसमें पिछले 75 वर्षों के दौरान भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों के विकास और देश की प्रगति में भारत के वैज्ञानिक समुदाय के उत्कृष्ट योगदान को दर्शाया गया है।

मैं इस अवसर पर आने वाले दिनों और वर्षों में भारत के वैज्ञानिकों तथा वैज्ञानिक अधिष्ठानों के और भी अधिक सामर्थ्यवान होने की कामना करता हूँ।

डॉ. जितेन्द्र सिंह